No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-1

05947

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2013

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : ***कुल चार*** *प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रथम प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है। शेष में से* ***किन्हीं तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 10x2=20

(क) माया महा ठगिनि हम जानी।
तिरगुन फाँसि लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।।
केशव के कमला होइ बैठी, सिव के भवन भवानी।
पंडा के मूरत होय बैठी, राजा के घर रानी।।
काहू के हीरा होइ बैठी, काहू के कौड़ी कानी।।
भक्तन के भक्तिन होइ बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी।।

(ख) अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल।
काम क्रोध कौ पहिरि चोलना कंठ बिषय की माल।।
महामोह के नूपुर बाजत निंदा सबद रसाल।

भ्रम भोयौ मन भयौ पखाबज चलत असंगत चाल।।
तृष्ना नाद करति घट भीतर नाना बिधि दै ताल।।
माया को कटि फँटा बाँध्यौ लोभ तिलक दियौ भाल।।
कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिँ काल।
सूरदास की सबै अबिद्या दूरि करौ नँदलाल।।

(ग) धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोल्हा कहै कोऊ।
काहूकी बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहकी जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु है रामकौ, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
मांगि के खैबो, मसीत को सोइबो, लैरोको एकु न दैबे को दोऊ।

(घ) पग बाँध घूँघर्‌या णाच्यँारी।।
लोग कह्याँ मीरा बावरी सासु कह्याँ कुलनासाँ री।
विख रो प्यालो राणा भेज्याँ पीवाँ मीरा हाँसाँ री।
तण मण वार्‌याँ हरि चरणामां दरसण अमरित प्यास्याँ री।
मीरा रे प्रभु गिरधर नागर, थारी सरणाँ आस्याँ री।।

2. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता पर विचार कीजिए। 10

3. विद्यापति के राजनैतिक दृष्टिकोण का मूल्यांकन कीजिए। 10

4. क्या कबीर अद्वैतवादी थे? विचार करें। 10

5. भक्ति आंदोलन के संदर्भ में सूरदास का महत्व क्या है? विवेचन कीजिए। 10

6. मीरा के काव्य के आधार पर सामंती समाज में नारी की स्थिति पर विचार कीजिए। 10

7. तुलसीदास की विचारधारा का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 10

8. मुक्तक काव्य की परंपरा में बिहारी का महत्व क्या है? विचार करें। 10